”जल स्तुति”

— डॉ॰ योगेन्द्र नाथ शर्मा ‘अरूण’, डी॰ लिट्॰

जग—जीवन का आधार है जल !
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

हैं रूप अनेक यहाँ जल के,
द्रव रूप में जीवन सा बरसे !
हिम रूप बना जल जमने से,
बन गया वाष्प जल जलने से !!

जलता है जल जब, वाष्प बने,
ठंडक जो मिले, बरसात बने !
बढ़ जाए ठण्ड जब और अधिक,
बरसात स्वयं हिमपात बने !!

करता है कैसे खेल यह जल !
जग—जीवन का आधार है जल !

फिर ताप बढ़ा गर्मी आई,
हिम से जलधार बनी भाई !
फिर घिरी घटा, चमकी चपला,
रिमझिम—रिमझिम वर्षा आई !!

जल प्यास बुझाने जब आया,
धरती का कण—कण हर्षाया !
धरती के भीतर पहुँचा जल,
अंकुर बन जीवन मुसकाया !!

यों जीवन बन जाता है जल !
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

जल फेला धरती के कण में,
रूक गया शिलाओं बीच कहीं !
फिर निकला जल निर्झर बनकर,
पाताल फोड़ कर कुँआ कहीं !!

जब धरती रसमय हो आई,
जल ऊपर ही तब बह निकला !
एकत्र हुआ फिर यहाँ—वहाँ,
सरिताओं, झीलों में जल बदला !!

नित रूप बदलता है यूं जल !
जग—जीवन का आधार है जल !!

नदियों पर बाँध बांध कर फिर,
मानव ने जल को रोक लिया !
जग—जीवन हो मंगलकारी,
यों जल का नित उपयोग किया !!

पन चक्की चलीं इसी जल से,
बिजली घर—घर में पहुँचाई !
बुद्धि से जल बन गया स्वर्ण,
उद्योगों में नव गति आई !!

बहुमुखी विकास करता है जल !
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

खेतों को हरियाली देकर,
जल ने ही जग को प्राण दिए !
नदियों को गति दी है जल ने,
तीर्थों को पावन नाम दिए !!

नदियों से विद्युत—शक्ति मिली,
जल से ही खुशहाली आई !
भारी लकड़ी के लठ्ठों को,
जल—धार बहा कर ले आई !!

यों शक्ति बना है शीतल जल !
जग—जीवन का आधार है जल !!

जल—तल नीचा, तो फसल सूखी,
ऊंचा तल हुआ, तो फसल सड़ी !
जल का उपयोग किया ढंग से,
मानव को मिली समृद्धि बड़ी !!

नल बना—बना कर शहरों में,
मानव की प्यास बुझाता जल !
रोगों से मुक्ति दिलाने का,
सुन्दर साधन बन जाता जल !!

ईश्वर का है वरदान यह जल !
जल बिना नहीं जीवन—संबल !!

जल का रिश्ता तो मानव से,
उल्टे अनुपात में होता है !
जनसंख्या ज्यों—ज्यों बढ़ती है,
जल का अभाव त्यों होता है !!

जल का उपयोग करे मानव,
तो जीवन में रसधार बहे !

जल को बेकार गंवाया तो,
मानव सचमुच लाचार रहे !!

सच्ची प्रगति का सार है जल !
जग–जीवन का आधार है जल !!

जल को नहीं व्यर्थ करे कोई,
जल का संरक्षण धर्म बने !
जल की महिमा समझाना ही,
मानव का सुन्दर कर्म बने !!

जल है पूजा, जल है भक्ति,
जल ईश्वर का वरदान सदा !
मानव–जीवन का मूल तत्व,
जल है शक्ति का नाम सदा !!

धरती का प्राणाधार है जल !
जल बिना नहीं जीवन–संबल !!

मानव–जीवन में इस जल का,
ऊँचा ही रहा स्थान सदा !
हर पल, हर क्षण, इस जल से ही,
मानव पाता सम्मान सदा !!

इस जल की पूजा करनी है,
इस जल से जीवन पाना है !
शक्ति के स्रोत 'ब्रह्म–जल' से,
पीड़ित को त्राण दिलाना है !!

परमेश्वर का ही सार है जल !
जल बिना नहीं जीवन–संबल !!

(साभारः राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान)